وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

और जान लो के जो कुछ तुम ग़नीमत में हासिल करो तो अल्लाह

وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ

और रसूल और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफिरों के लिए

وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا

उस का खुम्स है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस कुरआन पर जो हमारे बन्दे पर

عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ؕ

हक़ और बातिल के दरमियान फैसले के दिन हम ने उतारा, जिस में दो लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए।

وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٤١﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जब तुम क़रीब वाले

الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ

किनारे में थे और वो दूर वाले किनारे में थे और क़ाफला तुम से

مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ

नीचे था। और अगर तुम एक दूसरे से वादा कर लेते तो अलबत्ता वादे में ज़रूर तुम आगे पीछे हो जाते।

وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّیَهْلِكَ

ये इस लिए किया ताके अल्लाह फैसला फरमा दे एक काम का जो मुक़र्रर हो चुका था, ताके हलाक हो

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّ یَحْیٰی مَنْ حَیَّ

जिसे हलाक होना हो क़यामे हुज्जत के बाद और ज़िन्दा रहे जिसे ज़िन्दा रेहना हो

عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿٤٢﴾ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ

क़यामे हुज्जत के बाद। और यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब अल्लाह ने आप को दिखलाया

فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ

उन कुफ्फार को आप के ख्वाब में कम कर के। और अगर आप को अल्लाह उन कुफ्फार को ज़्यादा दिखाता तो तुम मुसलमान हिम्मत हार जाते

وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ

और तुम इस मुआमले में बाहम उलझ पड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया। यक़ीनन वो

عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ

दिलों के हाल को खूब जानने वाला है। और जब अल्लाह उन कुफ्फार को जब तुम मुक़ाबिल

الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّ يُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ

हुए, तुम्हारी निगाहों में तुम्हें कम दिखा रहा था और तुम्हें कम दिखा रहा था उन की निगाहों में

لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ

ताके अल्लाह एक काम का फैसला कर दे जो मुक़र्रर हो चुका था। और अल्लाह ही की तरफ

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً ع

तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी लश्कर के मुक़ाबिल हो

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾

तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके फलाह पाओ।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا

और अल्लाह और उस के रसूल का खुशी से केहना मानो और आपस में मत झगड़ो, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे

وَ تَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾

और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो। यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

और उन लोगों की तरह मत बनो जो अपने घरों से निकले थे

بَطَرًا وَّ رِئَآءَ النَّاسِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ

इतराते हुए और लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह के रास्ते से

اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَيَّنَ

रोकते थे। और अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब उन के लिए

لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

शैतान ने उन के आमाल मुज़य्यन किए और शैतान ने कहा के आज तुम पर इन्सानों में से

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ

कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और मैं तुम्हारा मददगार हूँ। फिर जब दोनों लश्कर एक दूसरे के

الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ

मुक़ाबिल हुए तो शैतान अपनी ऐड़ियों के बल पलट गया और केहने लगा के मैं तुम से

مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ

बरी हूँ के मैं देख रहा हूँ वो (फरिश्ते) जो तुम नहीं देख रहे, इस लिए मैं अल्लाह से डरता हूँ।

ع

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ

और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। जब मुनाफिक़ीन और वो लोग

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

जिन के दिलों में मर्ज़ है केह रहे थे के उन लोगों को उन के दीन ने मग़रूर बना रखा है।

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

और जो अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ

और काश के आप देखते जब के काफिरों की जान निकाल रहे होंगे फरिश्ते,

يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا

मार रहे होंगे उन के चेहरों पर और उन की पीठों पर। और (केहते होंगे के)

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ

आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन गुनाहों की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे

وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ

और ये बात साबित है के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं है। उन का हाल आले फिरऔन

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

के हाल की तरह और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे। जिन्हों ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ्र किया,

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ

फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। यक़ीनन अल्लाह क़ुव्वत वाला है, सख्त सज़ा देने

الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً

वाला है। ये इस वजह से के अल्लाह किसी नेअमत को बदलता नहीं जिस का उस ने

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ

किसी क़ौम पर इन्आम किया हो यहाँ तक के वो खुद न बदल लें उस को जो उन के दिलों में है।

وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

और ये के अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। उन का हाल आले फिरऔन के हाल की तरह

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से भी पेहले थे। जिन्हों ने अपने रब की आयात को झुठलाया

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ
फिर हम ने उन्हें हलाक किया उन के गुनाहों की वजह से और हम ने आले फिरऔन को ग़र्क़ किया।

وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝٥٤ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ
और सब के सब ज़ालिम थे। यक़ीनन बदतरीन मखलूक़ अल्लाह के

عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٥ اَلَّذِيْنَ
नज़दीक वो लोग हैं जो काफिर हैं, फिर वो ईमान नहीं लाते। उन में से

عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ
वो जिन से आप ने अहद कर रखा है, फिर वो अपने अहद को तोड़ते हैं

فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝٥٦ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ
हर मर्तबा में और वो डरते नहीं हैं। फिर अगर आप उन पर क़ाबू पाएं

فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝٥٧
जंग में तो उन के ज़रिए से मुन्तशिर कर दीजिए उन को जो उन के पीछे हैं, शायद वो नसीहत हासिल करें।

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ
और अगर तुम्हें डर हो किसी क़ौम की तरफ से खयानत का तो उन की तरफ बराबर सराबर

عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ۝٥٨ ع
मुआहदे को फैंक दो। यक़ीनन अल्लाह खयानत करने वालों से महब्बत नहीं करते।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۝٥٩
और काफिर लोग ये न समझें के वो भाग कर आगे निकल गए हैं। यक़ीनन वो (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ
और तुम तय्यारी रखो उन के लिए उस सामान की जिस की तुम इस्तिताअत रखते हो

وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ
और घोड़ों को बांध कर के भी जिस के ज़रिए तुम डराओ अल्लाह के दुश्मन को और अपने दुश्मन को

وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
और उन के अलावा दूसरों को जिन को तुम जानते नहीं हो। अल्लाह

يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
उन्हें जानते हैं। और जो चीज़ भी खर्च करोगे अल्लाह के रास्ते में

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝٦٠ وَاِنْ جَنَحُوْا

तो वो तुम्हें पूरी पूरी दी जाएगी और तुम्हें कम कर के नहीं दी जाएगी। और अगर वो सुल्ह की तरफ

لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

झुकें तो आप भी सुल्ह की तरफ झुकिए और अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन अल्लाह

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦١ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और अगर वो चाहें के वो आप को धोका दें

فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ

तो यक़ीनन अल्लाह आप को काफी है। वही अल्लाह है जिस ने अपनी नुसरत और ईमान वालों के ज़रिए

وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

आप को कूव्वत दी। और जिस ने उन के दिलों को जोड़ दिया। अगर आप खर्च कर देते

مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ

वो दौलत जो ज़मीन में है सारी की सारी तो भी उन के दिलों को जोड़ नहीं सकते थे,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٦٣

लेकिन अल्लाह ने उन के दिलों को जोड़ दिया। यक़ीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप को अल्लाह काफी है और वो मोमिनीन काफी हैं

ع ٨ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٤ۧ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ

जो आप के पीछे चल रहे हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! ईमान वालों को क़िताल

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ

पर उभारिए। अगर तुम में से बीस साबित क़दम रेहने वाले होंगे

يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ

तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से सौ होंगे

يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

तो एक हज़ार काफिरों पर ग़ालिब आ जाएंगे इस वजह से के वो ऐसी

لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝٦٥ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

क़ौम है जो कुछ समझती नहीं। अब अल्लाह ने तुम से तखफीफ कर दी और अल्लाह ने

اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
जान लिया के तुम में कमज़ोरी है। तो अगर तुम में से सौ साबित क़दम रेहने वाले होंगे

يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا
तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से एक हज़ार होंगे तो ग़ालिब आएंगे

اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۶۶﴾ مَا كَانَ
दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। नबी के लिए

لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ
मुनासिब नहीं है के उस के पास क़ैदी हों यहां तक के वो अच्छी तरह खून बहा दे

فِي الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ
ज़मीन में। तुम दुन्या का सामान चाहते हो, और अल्लाह आखिरत

الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۷﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ
चाहते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अगर अल्लाह की तरफ से पेहले से लिखी हुई तहरीर

مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۶۸﴾
न होती तो तुम्हें भारी अज़ाब पहोंचता उस फिदये की वजह से जो तुम ने लिया।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
अब तुम खाओ उस में से जो तुम ने ग़नीमत के तौर पर हासिल किया हलाल पाकीज़ा समझ कर और अल्लाह से डरो।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۹﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ ٩ ع ۵ ۵
यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप फरमा दीजिए उन क़ैदियों

فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
से जो तुम्हारे हाथों में हैं के अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में भलाई मालूम

خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ
करेगा तो अल्लाह तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और तुम्हारी मग़फिरत कर देगा।

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷۰﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ
और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अगर वो आप से खयानत करना चाहते हैं

فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ
तो यक़ीनन वो अल्लाह से इस से पेहले खयानत कर चुके हैं, फिर अल्लाह ने उन पर क़ुदरत दी।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए
وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ
और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया अपने मालों और जानों के ज़रिए
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا
अल्लाह के रास्ते में और जिन्हों ने ठिकाना दिया और नुसरत की
اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ
उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। और वो लोग
اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ
जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत नहीं की तो तुम्हारे लिए उन की किसी भी चीज़ की विलायत नहीं है
مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
(न इर्स की, न ग़नीमत की) जब तक के वो हिजरत न करें। और अगर वो तुम से दीन
فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ
में मदद तलब करें तो तुम पर मदद करना ज़रूरी है मगर ऐसी क़ौम के खिलाफ के तुम्हारे
وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾
और उन के दरमियान मुआहदा हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहे हैं।
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ
और वो जो काफिर हैं, वो उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं।
اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَ فَسَادٌ
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फितना हो जाएगा और बड़ा
كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
फसाद होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ
अल्लाह के रास्ते में और जिन्हों ने ठिकाना दिया और नुसरत की, यही
هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾
हक़ीक़ी मोमिन हैं। उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ

और वो जो ईमान लाए उस के बाद और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया

فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

तो ये लोग तुम ही में से हैं। और क़रीबी रिश्तेदार उन में से एक दूसरे

بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾ ع

के ज़्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

اٰيَاتُهَا ١٢٩ (٩) سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٣) رُكُوْعَاتُهَا ١٦

और १६ रूकूअ हैं सूरह तौबा मदीना में नाज़िल हुई उस में १२९ आयतें हैं

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ

अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से बराअत का ऐलान है उन मुशरिकीन की तरफ जिन

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾ فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ

से तुम ने मुआहदा किया था। के (मुशरिको!) तुम ज़मीन में चलो फिरो चार

اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ

महीने तक और तुम जान लो के तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे,

وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ

और ये के अल्लाह काफिरों को रूस्वा करने वाले हैं। और अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से तमाम

وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ

इन्सानों की तरफ आम ऐलान है हज्जे अकबर के दिन के अल्लाह

بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ

बरी है मुशरिकीन से और उस का रसूल भी बरी है। फिर अगर तुम तौबा करो

فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ

तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर रूगरदानी करो तो जान लो के अल्लाह को (भाग कर)

مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ

तुम आजिज़ नहीं कर सकते। और आप काफिरों को दर्दनाक अज़ाब की बशारत

اَلِيْمٍ ﴿٣﴾ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ

सुना दीजिए। मगर उन को जिन मुशरिकीन से तुम ने मुआहदा कर रखा था

ثُمَّ لَمۡ يَنۡقُصُوۡكُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَمۡ يُظَاهِرُوۡا عَلَيۡكُمۡ

फिर उन्हों ने तुम से किसी चीज़ की कमी नहीं की और उन्हों ने तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद

اَحَدًا فَاَتِمُّوۡۤا اِلَيۡهِمۡ عَهۡدَهُمۡ اِلٰى مُدَّتِهِمۡ ؕ

नहीं की, तो तुम उन के साथ उन के मुआहदे को पूरा करो उस की मुद्दत तक।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝۴ فَاِذَا انۡسَلَخَ الۡاَشۡهُرُ

यक़ीनन अल्लाह मुत्तकियों से महब्बत करते हैं। फिर जब हुरमत वाले महीने गुज़र

الۡحُرُمُ فَاقۡتُلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ حَيۡثُ وَجَدۡتُّمُوۡهُمۡ

जाएं तो मुशरिकीन को क़त्ल करो जहाँ उन को पाओ

وَ خُذُوۡهُمۡ وَاحۡصُرُوۡهُمۡ وَاقۡعُدُوۡا لَهُمۡ كُلَّ مَرۡصَدٍ ۚ

और उन को पकड़ो और उन को क़ैद करो और तुम उन के लिए हर ताकने की जगह में बैठो।

فَاِنۡ تَابُوۡا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें

فَخَلُّوۡا سَبِيۡلَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝۵

तो उन का रास्ता छोड़ दो। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَاِنۡ اَحَدٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ اسۡتَجَارَكَ فَاَجِرۡهُ حَتّٰى يَسۡمَعَ

और अगर मुशरिकीन में से कोई आप से पनाह तलब करे तो आप उस को पनाह दे दीजिए यहाँ तक के वो अल्लाह

كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ

के कलाम को सुने, फिर उस को उस के अमन की जगह तक पहोंचा दीजिए। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है

ع قَوۡمٌ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ۝۶ كَيۡفَ يَكُوۡنُ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ

जो जानती नहीं। मुशरिकीन के लिए कैसे मुआहदा बाक़ी रेह

عَهۡدٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَ عِنۡدَ رَسُوۡلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ

सकता है अल्लाह और उस के रसूल के पास मगर हाँ, जिन से

عٰهَدۡتُّمۡ عِنۡدَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ۚ فَمَا اسۡتَقَامُوۡا

तुम ने मस्जिदे हराम के पास मुआहदा किया था। फिर वो तुम्हारे लिए जब तक सीधे

لَكُمۡ فَاسۡتَقِيۡمُوۡا لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝۷

रहें तुम भी उन के लिए सीधे रहो। यक़ीनन अल्लाह मुत्तक़ियों से महब्बत फरमाते हैं।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ

कैसे (मुआहदा बाक़ी रेह सकता है) हालांके अगर वो तुम पर ग़ालिब आ जाएं तो तुम्हारे बारे में वो परवाह न करें

اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ تَاْبٰى

रिश्तेदारी और अहद की। वो तुम्हें अपने मुंह से खुश करते हैं हालांके उन के दिल इन्कार

قُلُوْبُهُمْ ۚ وَ اَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝۸ اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ

करते हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। उन्हों ने अल्लाह की आयात

اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ

के बदले थोड़ी क़ीमत ली, फिर उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका। यक़ीनन

سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۹ لَا يَرْقُبُوْنَ

बुरे हैं वो काम जो वो कर रहे हैं। वो परवाह नहीं करते

فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝۱۰

किसी मोमिन के बारे में रिश्तेदारी और ज़िम्मे की। और वही लोग ज़्यादती करने वाले हैं।

فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें

فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं। और हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए

يَّعْلَمُوْنَ ۝۱۱ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

जो जानती है। और अगर वो अपनी क़स्में तोड़ें अपने मुआहदे

عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ

के बाद और तुम्हारे दीन में तानाज़नी करें तो तुम कुफ्र के सरग़नों से

الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝۱۲

क़िताल करो, इस लिए के उन को क़स्मों की कोई परवाह नहीं, (उन से क़िताल करो) ताके वो बाज़ आ जाएं।

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَ هَمُّوْا

तुम क़िताल क्यूं नहीं करते ऐसी क़ौम से जिन्हों ने अपनी क़स्मों को तोड़ा और जिन्हों ने रसूल को

بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

निकालने का इरादा किया और उन्हों ने तुम से (नक़्ज़े अहद में) पेहल की।

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ

क्या तुम उन से डरते हो? हालांके अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के उस से डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ

मोमिन हो। उन से क़िताल करो ताके अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अज़ाब दे

وَ يُخْزِهِمْ وَ يَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ

और उन्हें रूस्वा करे और उन के खिलाफ तुम्हारी नुसरत करे और ईमान वाली क़ौम

قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ۙ وَ يُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ

के दिलों को शिफा दे। और उन के दिलों के ग़ैज़ को दूर करे।

وَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

और अल्लाह तौबा क़बूल करे जिस की चाहे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ

हिक्मत वाले हैं। क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है के तुम छूट जाओगे हालांके अब तक

اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا

अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं और उन्हों ने

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ

अल्लाह के अलावा और उस के रसूल और ईमान वालों के अलावा किसी को राज़दार नहीं बनाया।

ع٨ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ع مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ

और अल्लाह को खबर है उन कामों की जो तुम करते हो। मुशरिकीन का काम नहीं है

اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

के वो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें इस हाल में के वो अपने खिलाफ कुफ्र की गवाही देने

بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ

वाले हैं। यही लोग हैं के उन के आमाल हब्त हो गए। और वही दोज़ख में हमेशा

هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ

रेहने वाले हैं। अल्लाह की मसाजिद को सिर्फ वही लोग आबाद करते हैं जो ईमान लाए हैं

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं

وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا
और नहीं डरते मगर अल्लाह से, तो उम्मीद है के ये लोग हिदायतयाफ्ता

مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
लोगों में से हों। क्या तुम ने हाजियों के पानी पिलाने

وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
और मस्जिदे हराम के आबाद करने को उस शख्स की तरह बना दिया जो अल्लाह पर ईमान रखता है और आखिरी

الْاٰخِرِ وَ جٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط لَا يَسْتَوٗنَ
दिन पर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है। अल्लाह के नज़दीक

عِنْدَ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ وقف لازم
ये सब बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते। वो लोग

اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में

بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ لا اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ط
अपने मालों और जानों के ज़रिए, ये अल्लाह के नज़दीक दरजे के ऐतेबार से ज़्यादा बढ़े हुए हैं।

وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
और यही लोग कामयाब हैं। उन का रब उन्हें बशारत देता है

بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
अपनी रहमत की और खुशनूदी की और ऐसी जन्नतों की के उन के लिए उन में दाइमी नेअमतें

مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
होंगी। वो उन में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
भारी अज्र है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने

اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
बाप दादा और अपने भाइयों को दोस्त मत बनाओ अगर वो ईमान के मुक़ाबले में

عَلَى الْاِيْمَانِ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
कुफ्र को पसन्द करें। और जो तुम में से उन से दोस्ती रखेगा तो वही

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٣ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ
लोग गुनेहगार हैं। आप फरमा दीजिए के अगर तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे

وَاِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ
और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा क़बीला और वो माल जो तुम

اِقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا
ने कमाए हैं और वो तिजारत जिस के घाटे से तुम डरते हो

وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
और वो मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो, (अगर ये तमाम चीज़ें) तुम्हें अल्लाह और

وَرَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ
उस के रसूल और उस के रास्ते में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं, तो तुम मुन्तज़िर रहो यहां तक के अल्लाह

ع٩ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٤
अपना अज़ाब ले आए। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं देते।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुस्रत फरमाई बहोत से मैदानों में, (खास तौर पर)

حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
जंगे हुनैन में, जब के तुम्हारी कस्रत ने तुम्हें उज्ब में मुबतला किया, फिर ये कस्रत तुम्हारे

شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ
कुछ भी काम नहीं आई और तुम पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुसअत के बावजूद,

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝٢٥ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ
फिर तुम पीठ फेर कर भागे। फिर अल्लाह ने अपनी तसल्ली उतारी

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا
अपने रसूल पर और ईमान वालों पर और फौजें उतारीं

لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ
जो तुम ने नहीं देखीं और अल्लाह ने काफिरों को अज़ाब दिया। और ये काफिरों

الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٦ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
की सज़ा है। फिर अल्लाह उस के बाद तौबा क़बूल करेंगे

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

जिस की चाहें। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ

वालो! मुशरिकीन तो सरापा नजासत हैं, इस लिए वो मस्जिदे हराम के क़रीब

الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً

इस साल के बाद न जाने पाएं। और अगर तुम फक्र से डरते हो

فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ

तो अनक़रीब अल्लाह तुम्हें ग़नी कर देंगे अपने फ़ज़्ल से अगर चाहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। तुम क़िताल करो उन लोगों से जो एहले किताब में से

بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ

ईमान नहीं रखते अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और जो हराम नहीं क़रार देते उन चीज़ों को

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ

जो अल्लाह और उस के रसूल ने हराम क़रार दी हैं और दीने हक़ को अपना दीन नहीं बनाते,

اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ

(क़िताल करो) यहां तक के वो जिज़्या दें अपने हाथ से इस हाल में के वो

صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ ع ٥

ज़लील भी हों। यहूद ने कहा के उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं

وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ

और नसारा ने कहा के मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उन की अपने मुंह से कही हुई

بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

बातें हैं। ये उन लोगों जैसी बातें करते हैं जो उन से पेहले

مِنْ قَبْلُ ؕ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْۤا

काफिर हो चुके। उन पर अल्लाह की मार हो। ये किधर उल्टे जा रहे हैं? उन्हों ने

اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अपने उलमा और अपने राहिबों को रब बना लिया अल्लाह को छोड़ कर के

وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا

और रब बना लिया मसीह इब्ने मरयम को। हालांके खुद उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर इसी का के वो इबादत करेंगे

اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣١

एक ही माबूद की। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो पाक है उन चीज़ों से जिन को वो शरीक ठेहरा रहे हैं।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى

वो चाहते हैं के अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह इन्कार

اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٣٢

करते हैं मगर ये के वो अपने नूर को इतमाम तक पहोंचाएं अगर्चे काफिर लोग नापसन्द करें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा

النصف

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٣٣

ताके उसे ग़ालिब कर दे तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक नापसन्द करें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ

ऐ ईमान वालो! यक़ीनन बहोत से उलमा

وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ

और राहिब लोगों के माल बातिल तरीक़े से खाते हैं

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। और जो भी सौना और चाँदी को

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

खज़ाना कर के रखते हैं और उसे खर्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣٤ۙ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

तो आप उन्हें बशारत सुना दीजिए दर्दनाक अज़ाब की। जिस दिन जहन्नम की आग में

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ

उसे गर्म किया जाएगा, फिर उस के ज़रिए उन की पेशानी और उन के पेहलुओं और उन की

وَ ظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

पीठों को दाग़ा जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो है जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, तो अपने जमा करने का

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ
मज़ा चखो। यक़ीनन महीनों की तादाद
عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ
अल्लाह के नज़दीक बारा महीने हैं अल्लाह की किताब में उस दिन से जिस दिन
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ
अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में से चार हुरमत वाले महीने हैं। ये
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ
सीधा दीन है। इस लिए तुम उन में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो
وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ
और तमाम मुशरिकीन से क़िताल करो जैसा के वो तुम सब से क़िताल
كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾
करते हैं। और तुम जान लो के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।
اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
महीनों की तक़दीम व ताखीर ये कुफ्र में ज़्यादती है, उस के ज़रिए गुमराह किया जाता है उन लोगों को जो काफिर हैं
يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ
के उसे एक साल हलाल महीना बनाते हैं और अगले साल उसे हराम महीना बनाते हैं ताके वो उस तादाद के मुवाफिक़
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
बना दें जिसे अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया के फिर वो हलाल कर लें उसे जिस को अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया। उन के लिए उन की
اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ ع
बदअमली मुज़य्यन की गई। और अल्लाह काफिर क़ौम को हिदायत नहीं देते।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ
ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हुवा जब तुम से कहा जाता है के
انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ
तुम निकलो अल्लाह के रास्ते में तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो।
اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ
क्या तुम आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? जब के दुन्यवी ज़िन्दगी

الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا فِى الۡاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيۡلٌ‏ ۳۸ اِلَّا تَنۡفِرُوۡا
का फाइदा उठाना आखिरत के मुक़ाबले में नहीं है मगर थोड़ा। अगर तुम (अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए) नहीं निकलोगे
يُعَذِّبۡكُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۙ وَّيَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا غَيۡرَكُمۡ
तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और तुम्हारे अलावा दूसरी क़ौम को बदले में ले आएगा
وَلَا تَضُرُّوۡهُ شَيۡــًٔا ‌ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ‏ ۳۹
और तुम अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाले हैं।
اِلَّا تَـنۡصُرُوۡهُ فَقَدۡ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذۡ اَخۡرَجَهُ الَّذِيۡنَ
अगर तुम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुसरत नहीं करोगे तो यक़ीनन अल्लाह आप की नुसरत कर चुका है जब आप को काफिरों ने
كَفَرُوۡا ثَانِىَ اثۡنَيۡنِ اِذۡ هُمَا فِى الۡغَارِ اِذۡ يَقُوۡلُ
वतन से निकाला इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दो में से दूसरे थे, जब के वो दोनों ग़ार में थे
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا‌ ۚ فَاَنۡزَلَ اللّٰهُ
जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने साथी से फरमा रहे थे के ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह
سَكِيۡنَـتَهٗ عَلَيۡهِ وَاَ يَّدَهٗ بِجُنُوۡدٍ لَّمۡ تَرَوۡهَا
ने अपना सकीना उन पर उतारा और उन की मदद की ऐसे लश्करों के ज़रिए जिन को तुम ने देखा नहीं
وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا السُّفۡلٰى‌ ؕ وَكَلِمَةُ
और अल्लाह ने काफिरों के कलिमे को नीचे वाला बना दिया। और
اللّٰهِ هِىَ الۡعُلۡيَا ‌ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ‏ ۴۰ اِنۡفِرُوۡا
अल्लाह का कलिमा ही बुलन्द है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। निकलो
خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِكُمۡ وَاَنۡفُسِكُمۡ
हलके होने की हालत में और बोझल होने की हालत में और तुम जिहाद करो मालों और जानों के ज़रिए
فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ‌ ؕ ذٰ لِكُمۡ خَيۡرٌ لَّـكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ
अल्लाह के रास्ते में। ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम
تَعۡلَمُوۡنَ‏ ۴۱ لَوۡ كَانَ عَرَضًا قَرِيۡبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا
जानते हो। अगर क़रीब ही माल हो और दरमियाना सफर हो
لَّاتَّبَعُوۡكَ وَلٰـكِنۡۢ بَعُدَتۡ عَلَيۡهِمُ الشُّقَّةُ‌ ؕ
तो ज़रूर वो आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन्हें सफर मशक़्क़त भरा, दूर मालूम हुवा।

وَ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ج

और अब वो (मुनाफिक़ीन) अल्लाह की क़स्में खाएंगे के अगर हमें इस्तिताअत होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते।

يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ج وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾ ع

वो अपने आप को हलाक कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है के यक़ीनन वो झूठे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ج لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ

अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मुआफ कर दिया। आप ने उन मुनाफिक़ीन को इजाज़त क्यूं दी यहां तक

لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۴۳﴾

के आप के सामने अलग हो जाते वो जो सच्चे हैं और आप झूठों को जान लेते।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आप से इजाज़त नहीं मांगते वो लोग जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और अखिरी दिन पर

اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

के वो जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से। और अल्लाह मुत्तक़ियों को

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۴﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

खूब जानते हैं। आप से तो वही लोग इजाज़त तलब करते हैं जो ईमान नहीं रखते

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और उन के दिल शक करते हैं, फिर वो

فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

अपने शक में हैरान हैं। और अगर वो निकलने का इरादा करते

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ

तो ज़रूर उस के लिए तय्यारी भी करते लेकिन अल्लाह ने नापसन्द फरमाया उन का उठना,

فَثَبَّطَهُمْ وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۴۶﴾

इस लिए उन को पड़ा रेहने दिया और कहा गया के तुम बैठे रहो बैठे रेहने वालों के साथ।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَا۟ اَوْضَعُوْا

अगर वो तुम में शामिल हो कर निकलते भी तो वो तुम्हारा नुक़सान ही ज़्यादा करते और अलबत्ता तेज़ दौड़ते

خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ج وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

फिरते तुम्हारे दरमियान फितने की गर्ज़ से। और तुम में उन के लिए कुछ कान लगाने वाले

لَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا
(जासूस) हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। यक़ीनन उन्हों ने इस से पेहले भी
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ
फितना बरपा करना चाहा और आप के सामने उमूर को उलट पलट कर के पेश किया यहां तक के हक़
الْحَقُّ وَ ظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
आ गया और अल्लाह का अम्र वाज़ेह हो गया इस हाल में के वो नापसन्द कर रहे थे। और उन में से वो भी हैं
مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ
जो केह रहे थे के आप मुझे इजाज़त दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुनो! फितने में तो वो
سَقَطُوْا ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝
गिर चुके हैं। और यक़ीनन जहन्नम काफिरों को घेरे हुए है।
اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ
अगर आप को भलाई पहोंचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर आप को मुसीबत पहोंचे
يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا
तो केहते हैं के हम ने इस से पेहले हमारे मुआमले में एहतेयात को ले लिया था और वो लौटते हैं
وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ
इस हाल में के वो खुश होते हैं। आप फरमा दीजिए के हरगिज़ हमें नहीं पहोंचेगा मगर वही जो अल्लाह ने हमारे
اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
लिए लिख दिया है। वही हमारा मौला है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى
करना चाहिए। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे बारे में मुन्तज़िर नहीं हो मगर दो भलाइयों में
الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ
से एक के। और हम भी तुम्हारे लिए मुन्तज़िर हैं इस के के अल्लाह
اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۟ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا
तुम्हें अपनी तरफ से या हमारे हाथ से अज़ाब पहोंचाए। तो तुम मुन्तज़िर रहो,
اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا
यक़ीनन हम तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम खुशी से खर्च करो

اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا

या ज़बर्दस्ती, हरगिज़ तुम्हारी तरफ से क़बूल नहीं किया जाएगा। इस लिए के तुम नाफरमान

فٰسِقِيْنَ ۝٥٣ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ

लोग हो। और उन को मानेअ नहीं हुवा इस से के उन की तरफ से उन के सदक़ात क़बूल किए जाएं

اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ

मगर ये के उन्हों ने कुफ्र किया अल्लाह और उस के रसूल के साथ और वो नमाज़ में नहीं

الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَ هُمْ

आते मगर इस हाल में के वो सुस्त होते हैं और वो खर्च नहीं करते मगर इस हाल में के वो

كٰرِهُوْنَ ۝٥٤ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ

नापसन्द करते हैं। इस लिए आप को उन के माल और उन की औलाद अच्छी न लगे।

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

अल्लाह तो सिर्फ ये चाहता है के उन्हें इस के ज़रिए अज़ाब दे दुन्यवी ज़िन्दगी में

وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٥٥ وَيَحْلِفُوْنَ

और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों। और वो अल्लाह की

بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ

क़सम खाते हैं के यक़ीनन वो तुम में से हैं, हालांके वो तुम में से नहीं हैं, लेकिन वो

قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ

ऐसी क़ौम है जो डरती है। अगर वो पाएं कोई पनाह लेने की जगह या कोई ग़ार

اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧ وَ مِنْهُمْ

या कोई घुसने की जगह तो वो ज़रूर उस की तरफ भागेंगे इस हाल में के वो सरों को ऊँचा किए हुए होंगे। और उन

مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا

में से कुछ लोग वो हैं जो आप को सदक़ात के बारे में ताना देते हैं। फिर अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ दिया

رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨

जाए तो राज़ी हो जाते हैं और अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ न दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۙ

और अगर वो राज़ी रेहते उस पर जो अल्लाह और उस का रसूल उन को देते हैं

وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
और वो केहते के अल्लाह हमें काफी है, अल्लाह हमें अपने फज़्ल से अनक़रीब देगा
وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ
और उस का रसूल भी देगा। यक़ीनन हम तो अल्लाह की तरफ रग़बत करने वाले हैं (तो अच्छा होता)। सदकात तो
لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا
सिर्फ फुक़रा और मसाकीन और सदक़ात पर काम करने वालों
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ
और जिन की तालीफे क़ल्ब मक़सूद हो उन का हक़ है और सदक़ात गुलामों की गर्दन आज़ाद कराने में और जो मक़रूज़
وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً
हों उन में और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिरों के लिए हैं। अल्लाह की तरफ से फरीज़े के तौर पर।
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠ وَ مِنْهُمُ الَّذِيْنَ
और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों में से वो भी हैं जो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
يُؤْذُوْنَ النَّبِىَّ وَ يَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ
को ईज़ा पहोंचाते हैं और केहते हैं के ये तो कान हैं। आप फरमा दीजिए के तुम्हारे भले के लिए कान हैं जो
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ يُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
ईमान रखते हैं अल्लाह पर और तसदीक़ करते हैं ईमान वालों की
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ
और रहमत हैं तुम में से मोमिनीन के लिए, और जो
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦١
अल्लाह के रसूल को ईज़ा पहोंचाएंगे उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗٓ
वो अल्लाह की क़स्में खाते हैं तुम्हारे सामने ताके तुम्हें राज़ी कर दें। हालांके अल्लाह और उस का रसूल
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢
इस के ज़्यादा हक़दार हैं के वो उन को राज़ी करें अगर वो ईमान वालें हैं।
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ
क्या उन्हें मालूम नहीं के जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करेगा तो यक़ीनन

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ

उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो हमेशा रहेगा। ये भारी

الْعَظِيْمُ ۝٦٣ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ

रूस्वाई है। मुनाफिक़ इस से डरते हैं के उन पर कोई सूरत उतारी

سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ

जाए जो खबर देती हो उन को उन चीज़ों की जो उन के दिलों में है। आप फरमा दीजिए के तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो।

اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝٦٤ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

यक़ीनन अल्लाह उसे ज़ाहिर करेगा जिस से तुम डरते हो। और अगर आप उन से सवाल करें

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ نَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ

तो ज़रूर कहेंगे के हम तो सिर्फ दिल्लगी और खेल कर रहे थे। आप फरमा दीजिए के क्या अल्लाह के साथ

وَاٰيٰتِهٖ وَ رَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦٥

और उस की आयतों और उस के रसूल के साथ तुम मज़ाक़ करते हो?

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ

तुम उज़्र पेश मत करो, यक़ीनन तुम काफिर हो गए तुम्हारे ईमान लाने के बाद। अगर हम तुम में से

عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ

एक जमाअत को मुआफ करेंगे तो एक जमाअत को अज़ाब देंगे इस बिना पर

كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ ع ٨

कि वो मुजरिम थे। मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें उन में से

مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ يَنْهَوْنَ وقف لازم

एक दूसरे से हैं। वो बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से

عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ

रोकते हैं और अपने हाथों को बन्द रखते हैं। उन्हों ने भुला दिया अल्लाह को,

فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٦٧ وَعَدَ

फिर अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। यक़ीनन मुनाफिक़ वही नाफरमान हैं। अल्लाह ने

اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

वादा किया है मुनाफिक़ मर्दों और औरतों और काफिरों से जहन्नम की

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ

आग का जिस में वो हमेशा रहेंगे। ये उन को काफी है। और अल्लाह ने उन पर लानत की है।

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ۙ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। तुम्हारा हाल उन के हाल की तरह है जो तुम से पेहले थे

كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّ اَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ؕ

जो तुम से ज़्यादा कुव्वत वाले थे और तुम से ज़्यादा माल और औलाद वाले थे।

فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ

फिर उन्हों ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया, फिर तुम ने भी फाइदा उठा लिया तुम्हारे हिस्से से

كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

जैसा के उन लोगों ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया जो तुम से पेहले थे।

وَ خُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

और तुम मज़ाक़ उड़ाने में लगे रहे जैसा के वो मज़ाक़ उड़ाते थे। उन के आमाल

اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

हब्त हो गए दुन्या और आखिरत में। और यही लोग खसारा

الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

उठाने वाले हैं। क्या उन के पास उन लोगों की खबर नहीं आई जो उन से पेहले थे

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۙ۬ وَ قَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौम समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की क़ौम

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

और मदयन वाले और उलट दी जाने वाली बस्तियों की। जिन के पास उन के पैग़म्बर

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वो

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ

खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें

وقف لازم

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। वो नेकी का हुक्म देते हैं

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करते हैं।

اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾

उन लोगों पर अल्लाह जल्द ही रहम करेगा। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ

अल्लाह ने वादा किया है ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से जन्नतों का

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा रहेंगे

وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ

और (उस ने वादा किया है) उम्दा रेहने की जगहों का जन्नाते अद्न में। और अल्लाह की तरफ से

مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾ ع ۱۵

खुशनूदी सब से बड़ी नेअमत है। ये भारी कामयाबी है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप जिहाद कीजिए काफिरों से और मुनाफिक़ीन से

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾

और उन के बारे में सख्ती बरतिए। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी जगह है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا

वो अल्लाह की कस्में खाते हैं के ये बात उन्हों ने नहीं कही। यक़ीनन उन्हों ने

كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا

कुफ्र का कलिमा कहा और वो उन के इस्लाम के बाद काफिर हो गए और उन्हों ने इरादा किया ऐसी चीज़ का जिस को वो

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰهُمُ

हासिल न कर सके। और उन्हें बुरी नहीं लगी मगर ये बात के अल्लाह और उस के रसूल

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ

ने उन्हें ग़नी कर दिया अपने फ़ज़्ल से। फिर अगर वो तौबा करेंगे तो ये

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
उन के लिए बेहतर होगा। और अगर वो ऐराज़ करेंगे तो अल्लाह उन्हें अज़ाब देंगे
عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
दर्दनाक अज़ाब दुन्या और आखिरत में। और उन का
فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ
ज़मीन में कोई हिमायती और मददगार न होगा। और उन में से
مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ
कुछ लोग वो हैं जिन्हों ने अल्लाह से अहद किया था के अगर वो हमें अपने फ़ज़्ल से देगा
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾
तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और हम सुलहा में से बन जाएंगे।
فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ
फिर जब अल्लाह ने उन को अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख्ल किया और वो लौटते हैं ऐराज़
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ
करते हुए। फिर अल्लाह ने सज़ा के तौर पर उन के दिलों में निफाक़ डाल दिया
اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ
उस दिन तक जिस दिन वो अल्लाह से मिलेंगे इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह से
مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا
वादाखिलाफी की और इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
के अल्लाह जानता है उन के दिल की बात को और उन की सरगोशी भी और ये के अल्लाह
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ
तमाम पोशीदा चीज़ों को खूब जानने वाला है। वो लोग जो ताना देते है सदक़ात के
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
बारे में ईमान वालों में से सदक़ा करने वालों को और उन लोगों को जो नहीं पाते
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ
मगर अपनी ताक़त भर, फिर वो उन से मज़ाक़ करते हैं। अल्लाह भी उन से मज़ाक़ करता है।

مِنْهُمْ ؕ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। आप उन के लिए

اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ

इस्तिग़फार करें या न करें। अगर आप उन के लिए सत्तर मरतबा भी इस्तिग़फार

مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

करेंगे, फिर भी हरगिज़ अल्लाह उन की मग़फिरत नहीं करेगा। ये इस वजह से के उन्हों ने

كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

कुफ्र किया अल्लाह के साथ और उस के रसूल के साथ। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ ع

नहीं देते। जिहाद से पीछे रेहने वाले खुश हो गए अपने बैठे रेहने पर

رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ كَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ

अल्लाह के रसूल के पीछे और उन्हों ने नापसन्द किया के वो जिहाद करें अपने मालों

وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ ؕ

और जानों के ज़रिए अल्लाह के रास्ते में और उन्हों ने कहा तुम भी इस गर्मी में मत निकलो।

قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

आप फरमा दीजिए के जहन्नम की आग इस से भी ज़्यादा गर्म है। काश के वो समझते।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءً ۢ

फिर उन्हें चाहिए के वो कम हंसें और ज़्यादा रोएं। उन आमाल की सज़ा

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ

के तौर पर जो वो करते थे। फिर अगर आप को अल्लाह लौटाए

اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ

उन में से एक जमाअत की तरफ, फिर वो आप से इजाज़त तलब करें निकलने की तो आप केह दीजिए

لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِىَ عَدُوًّا ؕ

के तुम मेरे साथ हरगिज़ कभी भी मत निकलो और हरगिज़ क़िताल मत करो मेरे साथ रेह कर कभी भी किसी दुशमन से।

اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ

इस लिए के तुम बैठे रेहने पर राज़ी हो गए पेहली मरतबा में, तो अब तुम बैठे रहो

الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ
पीछे रेहने वालों के साथ। और उन में से किसी ऐक की जो मर जाए न कभी नमाज़े जनाज़ा

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ
पढ़िए, न उस की क़ब्र पर खड़े रहिए। इस लिए के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ

وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ
कुफ़्र किया और वो मरे इस हाल में के वो फ़ासिक़ थे। और उन के माल और उन की औलाद

اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ
आप को अच्छे न लगें। अल्लाह तो सिर्फ ये चाहते हैं के उन्हें

بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾
अज़ाब दें उस के ज़रिए दुन्या में और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों।

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا
और जब कोई सूरत उतारी जाती है के ईमान लाओ अल्लाह पर और तुम जिहाद करो

مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَ قَالُوْا
अल्लाह के रसूल के साथ मिल कर तो उन में से इस्तिताअत वाले आप से इजाज़त तलब करते हैं और केहते हैं

ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا
के आप हमें छोड़ दीजिए के हम बैठे रेहने वालों के साथ रहें। वो पसन्द करते हैं इस को के वो

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾
पीछे रेहने वालियों के साथ हों, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई, फिर वो समझते नहीं।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا
लेकिन रसूल और वो लोग जो रसूल के साथ ईमान लाए हैं, उन्हों ने जिहाद किया

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ز
अपने मालों और जानों के ज़रिए। उन ही के लिए भलाइयाँ हैं।

وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ
और यही फलाह पाने वाले हैं। अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती हैं, जिन में वो हमेशा रहेंगे।

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَ جَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ ع ٩/١٧

ये भारी कामयाबी है। और अअराब में से उज़्र पेश करने वाले

مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَ قَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا

आए ताके उन्हें इजाज़त दी जाए और बैठे रेह गए वो जिन्हों ने अल्लाह

اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

और उस के रसूल से झूठ बोला। अनक़रीब उन में से काफिरों को दर्दनाक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى

अज़ाब पहोंचेगा। ज़ुअफा पर और बीमारों पर और उन पर कोई हर्ज नहीं

وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ

जो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें

اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ

जब के वो अल्लाह और उस के रसूल के खैरख्वाह हों। नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम

مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ

नहीं है। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और न उन पर कोई हर्ज है के

اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

जब वो आप के पास आते हैं के आप उन्हें सवारी दें तो आप फरमाते हैं के मैं नहीं पाता

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ

वो सवारी जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ। तो वो वापस लौटते हैं इस हाल में के उन की आँखों से आंसू

مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا

बेह रहे होते हैं ग़म के मारे इस वजह से के वो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें। इल्ज़ाम

السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ

तो सिर्फ उन लोगों पर है जो आप से इजाज़त तलब करते हैं इस हाल में के

اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ

वो मालदार हैं। वो पसन्द करते हैं के वो पीछे रेहने वालियों के साथ रहें।

وَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, फिर उन्हें मालूम भी नहीं।